अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम : स्वरूप एवं विषयवस्तु

डॉ. विद्यानन्द पाण्डेय
बी.टी.टी.सी., सरदारशहर

सार:

शिक्षा जगत में प्रयोजनवाद की अवधारणा के साथ ही यह स्पष्ट हो गया कि छात्र–शिक्षक के बीच सकारात्मक अंतःक्रिया के लिए पाठ्यक्रम आवश्क बिन्दु है। पाठ्यक्रम राष्ट्र और समाज की शैक्षिक आकांक्षा का चित्रपट होता है। विषय वस्तु को उद्देश्य तक पहुंचाने का मार्ग पाठ्यक्रम द्वारा ही बनता है। समाज और राष्ट्र की आवश्यकता तथा भावना में परिवर्तन होने के साथ पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन अपेक्षित होता है।

प्रस्तावना

शिक्षक शिक्षा की प्रारम्भिक अवधारणा में पाठ्यक्रम का बहुत व्यापक, वैज्ञानिक तथा परिष्कृत रूप नहीं था। यह कार्यक्रम शिक्षक प्रशिक्षण के रूप में अंकुरित हुआ और शिक्षण के सामान्य कौशलों का प्रशिक्षण देना ही पर्याप्त समझा जाता था। वर्तमान समय में शिक्षकों का पशिक्षण नई संकल्पना के साथ चलाया जा रहा है। अब यह शिक्षक शिक्षा की संज्ञा ले चुका है। शिक्षक शिक्षा के सामान्य पाठ्यक्रम पर कभी भी गंभीरता से विचार नहीं किया गया परन्तु आज शिक्षक की जिम्मेदारी पहले की अपेक्षा अधिक हो गई है। अब वह छात्र–समाज का एक संवेदनशील साक्षी हो गया है। अब वह केवल उपदेष्टा नहीं, पथप्रदर्शक नहीं, अनुशास्ता नहीं, वह छात्र का सहयोगी तथा मित्र है एवं उसकी अंतःशक्ति और क्षमता को उत्प्रेरित करने वाला भी है। इसलिए आज पाठ्यक्रम में उनपक्षों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है जो छात्र को एक कौशल प्राप्त व्यवसायी की अपेक्षा सुन्दर मानव बना सकें।

इस दृष्टि से शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम में सुधार, संशोधन एवं परिष्करण हेतु शैक्षिक आयोगों, समितियों एवं शिक्षाशास्त्रियों तथा समाज सुधारकों ने सुझाव भी दिये है। उनके अनुसार उनमें संशोधन भी हुए है। यू.जी.सी., एन.सी.ई.आर.टी. और अब एन. सो.टी.ई. जैसी अधिमान्य संस्थाएं शिक्षक–शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए पाठ्यक्रम में आवश्यक विषयवस्तु को रख रही है। शिक्षकों को शिक्षा का प्राणतत्व मानते हुए दनकी शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन आवश्यक हो गया है। कौठारी कमीशन पाठ्यक्रम में शैक्षणिक पक्ष को सुदृढ़ करने का सुझाव दिया। चट्टोपाध्याय समिति ने माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षण का कार्यकाल पांच वर्ष करने का सुझाव दिया एवं कॉलेजों में शिक्षक–शिक्षा का विषय पढ़ाने पर सहमति व्यक्त की। नई शिक्षा नीति एवं राममूर्ति समिति ने इसे समाज से जोड़ने एवं व्यावहारिक रूप प्रदान करने की सिफारिश की।

यशपाल समिति ने स्वअधिगम एवं स्वतंत्र चिन्तन करने की बात की और पाठ्यक्रम में पुस्तकों के अधिक प्रयोग को अनुपयोगी बताया।

एन.सी.एफ. 2005 ने पैराशिक्षकों की भर्ती पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे गुणवत्ता प्रभावित होगी। दो दशक पहले हमारा ध्यान सेवारत प्रशिक्षण पर ही अधिक रहा है। इस समय का पाठ्यक्रम न तो नये सन्दर्भ में लिया गया न ही स्कूल एवं समाज से जुड़ने वाला है। इस समय के पाठ्यक्रम में अनुभव को कोई स्थान नहीं है। पाठ्यक्रम में ज्ञान के औचित्य को बिना समझ ही पाठ्यचर्या में जोड़ दिया जाता है। छात्र एवं शिक्षकों के बीच अपने अनुभवों को बांटने का कोई स्थान नहीं है। एन.सी.एफ. 2005 ने शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि अब पाठ्यक्रम में सुधार की आवश्यक्ता है जिससे शिक्षक–प्रशिक्षक –

1. प्रशिक्षणार्थी का विकास एक शिक्षक के रूप में उनकी सम्भावना के अनुसार कर सकें।
2. प्रशिक्षणार्थी में सीखने की प्रणाली, समझ को उनके अनुकूल विकसित कर सके।
3. प्रशिक्षणार्थी को समाज का संवेदनशील कार्यकर्ता बना सकें।
4. अपनी आकांक्षा, आत्मविवेक गहरी समझ तथा क्षमता से प्रशिक्षण कार्य करें।
5. प्रशिक्षक के साथ स्वयं शिक्षक और छात्र की भूमिका में भी रहे है।
6. प्रशिक्षणार्थी का सतत् मूल्यांकन कर उनकी सीमाओं का बोध कराते रहे है।
7. प्रशिक्षणार्थी में कलात्मक एवं सौन्दर्य बोध को बढावें।
8. कमजोर प्रशिक्षणार्थी पर अधिक ध्यान देता रहे।
9. छात्राध्यापक की व्यक्तिगत, सामाजिक एवं शैक्षिक समस्या का समाधान खोजे।
10. सक्रिय शिक्षण के साथ–साथ नवाचार एवं खोज परक प्रशिक्षण करावें।

वस्तुतः शिक्षक–शिक्षा का पाठ्यक्रम सामान्य अकादमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम से भिन्न है। इसमें प्रायोगिक एवं अभ्यास शिक्षण का कार्य कक्षाध्यापन के साथ–साथ चलता है। शिक्षक शिक्षण में अध्यापक की दौहरी भूमिका होती है। एक भूमिका में शिक्षक होता है, दूसरी भूमिका में वह शिक्षकों का शिक्षक होता है। उसी तरह छात्र की भी दौहरी भूमिका होती है। वह एक ओर शिक्षक है दूसरी ओर छात्र। इसीलिए रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि – अच्छा शिक्षक वही होता है जो सदैव छात्र की तरह सीखने के लिए लालायित रहता है। प्रशिक्षण सेंस्थाओं में जो पाठ्यक्रम प्रचलित है वह अकादमिक अधिक है। जो छात्र–जीवन में हम सीखते है वहीं प्रशिक्षण में भी चला आता है, केवल संस्था बदल जाती है, पुस्तके और विषयवस्तु बदल जाती है – पाठ्यक्रम की अवधारणा नहीं बदलती। प्रशिक्षण काल में सैद्धान्तिक शिक्षण कम होना चाहिए। पाठ्यक्रम को ओपचारिक अंधन से मुक्त रखना चाहिए अभ्यास एवं प्रायोगिक कार्य को अधिक महत्व देना चाहिए। पाठ्यक्रम ऐसा हो जिसमें छात्राध्यापक –

1. स्वयं चिंतनशील बना रहे।
2. अपने अनुभव को सामाजिक परिस्थिति से जोड़ सके।
3. अपने को सामुदायिकता से जोड़ सकें।
4. पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग ले सके।
5. अपनी गति से मनोवैज्ञानिक क्षमता का विकास कर सके।
6. अपने को समाज और राष्ट्र से जोड़ सके।

आज का पाठ्यक्रम वही उपाधि और प्रमाण–पत्र दे रहा है जो अकादमिक पाठ्यक्रम दे रहे है। इसलिए मूल्यांकन एवं परीक्षा प्रणाली को पुस्तक आधारित न बनाकर कार्य आधारित बनाना चाहिए। जिसका स्वाभाविक प्रयोग शिक्षक अपने जीवन में कर सके। व्यावसायिक साक्षात्कार के समय प्रशिक्षणकाल के प्रश्न कम पूछे जाते है। इसलिए अकादमिक विषयों की अपेक्षा प्रशिक्षण से सम्बन्धित विषयों पर चरचा अधिक होनी चाहिए। प्रशिक्षण के समय जिस रीति–नीति एवं तकनीक का प्रयोग छात्राध्यापकों को बताया जाता है उन्हें साक्षात्कार के समय प्रायः उपेक्षित कर दिया जाता है एवं छात्र शेष जीवन में भी उनका प्रयोग नहीं करते।

वस्तुतः शिक्षा एक वैचारिक तथा परिवर्तनशील प्रक्रिया है, इसकी अवधारणा में परिवर्तन होता रहता है। आज की शिक्षा एक वेतनभोगी कार्यकर्ता के रूप में शिक्षकों का निर्माण कर रही है इसलिए पाठ्यक्रम पूर्णतया औपचारिक हो गया है। औपचारिकता से मुक्त शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की एक उपयोगिता है। उसमें स्वाभाविकता, सक्रियता, सहकार, समन्वय तथा सामाजिक सारोकार के विषयों का प्रायोगिक तथा व्यावहारिक निरूपण करना आवश्यक है जिनका प्रशिक्षण दिया जा सके। आज के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में निम्नांकित विषयवस्तुओं पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जिनका प्रशिक्षण भावी अध्यापकों के लिए महत्वपूर्ण होगा –

1. पाठ्यक्रम वैश्विक समस्याओं पर विचार करने वाला हो।
2. भू–मण्डलीकरण की प्रवृत्ति के साथ समायोजन करने वाला हो।
3. भौतिक एवं प्राकृतिक प्रदूषण से मुक्ति का मार्ग बताने वाला हो।
4. सामाजिक समस्याओं पर खुली वार्ता का अवसर देने वाला हो।
5. अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद उग्रवाद को समाप्त करने पर विचार करने वाला हो।
6. मानवाधिकार एवं नागरिक कर्तव्यों का बोध कराने वाला हो।
7. प्राकृतिक संसाधनों के संगरक्षण की तकनीक बताने वाला हो।
8. प्राकृतिक आपदा प्रबंधन के प्रति जागरूक कराने वाला हो।
9. आदर्श प्रतिमानो से प्रेरणा लेकर जीवन में शान्ति स्थापित करने वाला हो।
10. स्वास्थ्यंरक्षा, नशामुक्ति, एड्स से बचाव, स्वच्छता एवं शुचिता का ज्ञान कराने वाला हो।

निष्कर्षतः हम कह सकत है कि वर्तमान शिक्षक–शिक्षा पाठ्यक्रम वास्तविक्ता और जीवनके यथार्थ से मुक्त हैं। इसमें सैद्धान्तिकता अधिक है उन व्यावहारिक पक्षों का अभाव है जो एक जागरूक नागरिक के साथ कर्तव्य परायण शिक्षक का निर्माण कर सके। उस शिक्षक का जो एक मोमबत्ती की तरह अपने को जला कर दुनियां को प्रकाश दे सके। केवल कुछ प्रश्न पत्रों का सैद्धान्तिक तथा कुछ अभ्यास पाठों का प्रायोगिक प्रशिक्षण कराने वाला ही पाठ्यक्रम अच्छा पाठ्यक्रम नहीं हो सकता। आज के शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में सामाजिक, राष्ट्रीय, सामूदायिक तथा मानवीय संवेदन शीलता का अभाव है इसीलिए आज का शिक्षक शिक्षा जगत की उन तमाम समस्याओं का समाधान करने में पूर्णतया अक्षम है जो मानव जीवन की दैनिक समस्या के रूप में सामाजिक अवबोध बनती जा रही है।